भावार्थ

250 copies

साखियों की सप्रसंग व्याख्या

1. ऐसी बाँणी बोलिये, मन का आपा खोइ।
अपना तन सीतल करै, औरन कौं सुख होइ।।

शब्दार्थ : **बाँणी** = बोली, **आपा** = अहंकार (घमंड), **सीतल** = ठंडा, **तन** = शरीर

प्रसंग : प्रस्तुत दोहा भक्तिकालीन हिंदी निर्गुण काव्यधारा के प्रतिनिधि संत कवि कबीरदास द्वारा रचित है। इस दोहे में कबीर ने मीठी वाणी के महत्व पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या : कबीरदास जी कहते हैं कि हमें ऐसी बोली बोलनी चाहिए जो हमारे हृदय के अहंकार को मिटा दे अर्थात जिसमें हमारा अहं न झलकता हो, जो हमारे शरीर को भी ठंडक प्रदान करे तथा दूसरों को भी सुख प्रदान करे अर्थात हमारे तन को शीतलता प्रदान करे तथा सुनने वाले (श्रोता) को भी मानसिक सुख प्रदान करे।

2. कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढ़ै बन माँहि।
ऐसैं घटि घटि राँम है, दुनियाँ देखै नाँहि।।

शब्दार्थ : **कस्तूरी** = एक सुगंधित पदार्थ, **कुंडलि** = नाभि, **मृग** = हिरन, **वन** = जंगल, **माँहि** = भीतर, **घटि-घटि** = घट-घट में (प्रत्येक हृदय रूपी घड़े में)

प्रसंग : प्रस्तुत दोहा भक्तिकालीन हिंदी निर्गुण काव्यधारा के प्रतिनिधि संत कवि कबीरदास द्वारा रचित है। कबीरदास जी इस साखी (दोहे) के माध्यम से ईश्वर के सृष्टि में वास के संबंध में बता रहे हैं।

व्याख्या : कबीरदास उदाहरण द्वारा ईश्वर की महत्ता स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि कस्तूरी तो हिरन की नाभि में स्थित होती है। परंतु वह उसे वन में ढूँढ़ता है अर्थात वह अपने अंदर बसी कस्तूरी को नहीं पहचान पाता है। यही स्थिति मनुष्य की है। ईश्वर तो प्रत्येक हृदय में निवास करता है और मनुष्य उसे इधर-उधर ढूँढ़ता फिरता है अर्थात मनुष्य अपने भीतर ईश्वर को न ढूँढ़कर उसे प्राप्त करने के लिए स्थान-स्थान पर भटकता रहता है।

3. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि।।

शब्दार्थ : **मैं** = अहं (अहंकार), **हरि** = भगवान, **अँधियारा** = अंधकार, **मिटि** = मिटना, **देख्या** = देखना।

प्रसंग : प्रस्तुत दोहा भक्तिकालीन हिंदी निर्गुण काव्यधारा के प्रतिनिधि संत कवि कबीरदास द्वारा रचित है। इस दोहे के माध्यम से कबीरदास जी ने ज्ञान रूपी प्रकाश के विषय में बताया है।

व्याख्या : कबीरदास जी कहते हैं कि जब तक मेरे अंदर अहंकार था, तब तक मुझे ईश्वर की प्राप्ति नहीं हुई थी। अब जब कि मेरे अंदर का अहं मिट चुका है, तब मुझे ईश्वर की प्राप्ति हो गई है। जब मैंने ज्ञान रूपी दीपक के दर्शन कर लिए, तब अज्ञान रूपी अंधकार मिट गया अर्थात अहं भाव को त्याग कर ही मनुष्य को ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है।

4. सुखिया सब संसार है, खायै अरू सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरू रोवै।।

शब्दार्थ : **सुखिया** = सुखी, **अरू** = और, **सोवै** = सोना (निद्रा), **दुखिया** = दुखी, **रोवै** = रोना।

प्रसंग : प्रस्तुत दोहा भक्तिकालीन हिंदी निर्गुण काव्यधारा के प्रतिनिधि संत कवि कबीरदास द्वारा रचित है। कबीरदास जी सुखी व्यक्ति एवं दुखी व्यक्ति के विचारों का चिंतनपरक विश्लेषण करते हैं।

व्याख्या : कबीरदास जी कहते हैं कि यह संसार सुखी है क्योंकि यह केवल खाने और पीने के काम में लगी हुई है और निश्चिंत होकर सो रहा है। मगर कबीर दास दुनिया की यह दशा देखकर जागे हुए हैं और रो रहे हैं।

5. बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।
राम बियोगी ना जिवै, जिवै तो बौरा होइ॥

शब्दार्थ : **बिरह** = वियोग, **भुवंगम** = साँप, **तन** = शरीर, **जिवै** = जीवित रहना, **बौरा** = पागल, **होइ** = होना, **मंत्र** = उपाय।

प्रसंग : प्रस्तुत दोहा भक्तिकालीन हिंदी निर्गुण काव्यधारा के प्रतिनिधि संत कवि कबीरदास द्वारा रचित है। कबीरदास जी राम-वियोगी की मन:स्थिति का चित्रण कर रहे हैं।

व्याख्या : कबीरदास जी बिरही मनुष्य की मन:स्थिति की चर्चा करते हुए कहते हैं कि विरह रूपी सर्प शरीर में निवास करता है। उस पर किसी प्रकार का उपाय या मंत्र भी असर नहीं करता। उसी प्रकार राम के वियोग में मनुष्य भी जीवित नहीं रह सकता। यदि वह जीवित रह भी जाता है तो उसकी स्थिति पागल व्यक्ति जैसी हो जाती है।

6. निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ।
बिन साबण पाँणीं बिना, निरमल करै सुभाइ॥

शब्दार्थ : निंदक = बुराई (निंदा) करने वाला, **नेड़ा** = निकट, **आँगणि** = आँगन, **कुटी** = कुटिया (झोंपड़ी), **बँधाइ** = बाँधकर, **साबण** = साबुन, **पाँणी** = पानी, **निरमल** = पवित्र, **सुभाइ** = स्वभाव।

प्रसंग : प्रस्तुत दोहा भक्तिकालीन हिंदी निर्गुण काव्यधारा के प्रतिनिधि संत कवि कबीरदास द्वारा रचित है। कबीरदास जी इस दोहे के माध्यम से निंदा करने वाले व्यक्ति का महत्व प्रतिपादित करते हैं।

व्याख्या : कबीरदास जी कहते हैं कि निंदा करने वाले व्यक्ति को अपने पास रखना चाहिए, हो सके तो उसे अपने आँगन में कुटिया (झोंपड़ी) बनाकर रखना चाहिए। वह हमें साबुन और पानी के प्रयोग के बिना ही हमारे स्वभाव को पवित्र कर देता है अर्थात अपनी निंदा सुनकर हम अपनी त्रुटियों को सुधार लेते हैं। इससे हमारी स्वभावगत बुराइयाँ दूर हो जाती हैं।

7. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।
ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ॥

शब्दार्थ : पोथी = पुस्तक, **पढ़ि-पढ़ि** = पढ़-पढ़ कर, **जग** = संसार, **मुवा** = मर गया, **भया** = हुआ, बना, **ऐकै** = एक ही, **कोइ** = कोई, **अषिर** = अक्षर, **पीव** = प्रियतम, ईश्वर।

प्रसंग : प्रस्तुत दोहा भक्तिकालीन हिंदी निर्गुण काव्यधारा के प्रतिनिधि संत कवि कबीरदास द्वारा रचित है। कबीरदास जी ने इस साखी में प्रिय के महत्व को दर्शाया है।

व्याख्या : कबीरदास जी कहते हैं कि यह संसार पुस्तकें पढ़-पढ़ कर मृत्यु को प्राप्त हो गया। परंतु अभी तक कोई भी पंडित नहीं बन सका। यदि मनुष्य ईश्वर भक्ति का एक अक्षर भी पढ़ लेता तो वह अवश्य ही पंडित बन जाता अर्थात ईश्वर ही एकमात्र सत्य है, इसे जानने वाला ही वास्तविक ज्ञानी और पंडित है।

8. हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि॥

शब्दार्थ : **जाल्या** = जलाया, **आपणाँ** = अपना, **मुराड़ा** = जलती हुई लकड़ी, **जालौं** = जलाऊँ, **तास का** = उसका, **जे** = जो।

प्रसंग : प्रस्तुत दोहा भक्तिकालीन हिंदी निर्गुण काव्यधारा के प्रतिनिधि संत कवि कबीरदास द्वारा रचित है। इसमें कबीर समाज को सुधारने की बात करते हैं।

व्याख्या : कबीरदास जी कहते हैं कि हमने पहले अपना घर जलाया, फिर जलती हुई लकड़ी को हाथ में ले लिया। अब हम उसका घर जलाएँगे, जो हमारे साथ चलेगा अर्थात पहले हम अपने घर की बुराइयाँ नष्ट करेंगे, फिर अपने साथियों की बुराइयाँ दूर करके ज्ञान का प्रकाश फैलाएँगे।